रमज़ान के बाद
हमारा जीवन कैसा हो?

हर ईमान वाले कि यह इच्छा होती है के इस का रब व मालिक (स्वामी) इस से राज़ी व सन्तुष्ट हो जाए। अल्लाह तआ़ला इसे अपनी खुशनूदगी व प्रसन्नता से संभोदित व अनुदान करे।

हबीब करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से मुहब्बत तथा आप के दरबार से नाता बन्दे मोमिन के जीवन का महत्वपूर्ण व प्रमुख उद्देश्य हुआ करता है। अर्थात वह अपनी उद्देश्य मंज़िल व लक्ष्य तक पहुंचने के लिए पालन व आवेदन कि राह को अपनाता है।

शरीअ़त के निर्धारित अहकाम पर कार्यरत हो जाता है। हमेशां नेकियों को समापन देने कि चिन्ता करता है। बुराईयों से सीमित (नियंत्रति रहना) रहने कि कोशिश करता है तथा तक़वा व तहारत का जीवन गुज़ारता है।

अल्लाह तआ़ला इसी बात से सन्तुष्ट व राज़ी होता है के इस के बन्दे सत्य कि राह पर रहें। अल्लाह तआ़ला कि तथा इस के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि आज्ञापालन किया करें तथा धर्मनिष्ठ व धर्मपरायण व परहेज़गार बन जाएं।

रमज़ान मुबारक में अल्लाह तआ़ला ने जो रोज़े फर्ज़ फरमाए हैं, हस की महत्वपूर्ण हिकमत (विवेक) यह वर्णन फरमाई के रोज़े कि बरकत से

रोज़ेदार धर्मनिष्ठ को अपना लेता है तथा परहेज़गारी व धर्मपरायण को अपना लेता है।

जिस प्रकार सुरह बखरह कि 183 आयत मुबारक में रोज़े कि प्रशंसा व प्रतिभा वर्णन करते हुए आदेश फरमायाः- भाषांतरः- ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

(सुरह बखरहः 02:183)

स्पष्ट रहे के तक़वा तथा परहेज़गारी (धर्मनिष्ठ व धर्मपरायण) कि या स्थिति केवल प्रिय रमज़ान तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए। वर्णन अल्लाह तआ़ला के आदेश में जो उद्देश्य व लक्ष्य वर्णन किया गया इ से यही रोशनी मिलती है के रोज़ेदार का सम्पूर्ण जीवन तक़वा व परहेज़गारी (धर्मनिष्ठ व धर्मपरायण) दर्पण व आईनेदार हो।

माह रमज़ान में की जाने वाली इ़बादतें तथा उपासना अतीत (भूतकाल) कि यादगार बन कर ना रह जाएं बल्कि आने वाले जीवन में भी इन्हीं --- को अपनाया जाए। क्यों के तक़वा का तात्पर्य यही है के हमेशां अल्लाह कि रज़ा के हासिल करने कि चन्ता हो। बन्दे से कोई ऐसा कर्म समापन ना हो जो अल्लाह कि नाराज़गी का कारण हो।

धर्मनिष्ठ व तक़वा के अनेक अर्थ वर्णन किए गए हैं। अल्लामा सैयद महमूद आलूसी रहमतुल्लाहि अलैह लिखते हैं-

भाषांतरः- परहेज़ागरी यह है के अल्लाह तआ़ला ने जिस चीज़ से मना फरमाया इस में तुझ व्यस्त ना पाय तथा जिस का आदेश फरमाया वहाँ अज्ञात व ग़ाफिल ना पाय।

(रुल अल मआ़नी, सुरह अल बखरहः 02)

क्या रमज़ान के बाद रहमत व बरकत का सिलसिला समाप्त हो गया?

मालूम हुआ के मोमिन के हर कर्म से तक़वा व धर्मनिष्ठा का संबंध है। रमज़ान मुबारक हो या अन्य महिने, वह ऐसे ही कर्म को समाविष्ट करें जिस में अल्लाह तआ़ला कि प्रसन्नता हो तथा इस कर्म को हरगिज़ ना अपनाए जो अल्लाह कि मरज़ी के विरुद्ध हो।

पावन रमज़ान का सम्पूर्ण महीना हम नेकियों से अपना दामन भरते रहे। इस मुबारक महीने कि बरकतें तथा वरदान हमारे भाग्य में आती रहें। सारा महीना अल्लाह कि रहमत कि चादर हम पर तनी रहें। प्रश्न यह है के कया बरकतों का यह सिलसिला माह रमज़ान के बाद समाप्त हो जाएगा।

रहमतों कि जो चादर हम पर छायामात्र थी, कया माह रमज़ान गुज़र जाने के बाद खींच ली जाएगी? हरगिज़ नहीं! आवश्यकता इसी बात कि है के हम अपने भीतर महत्वपूर्म स्वभाव पैदा करें। अपने दामन को इस योग्य बनाएं के में हम संसार व आखिरत कि बरकतें समा सकें।

हम अपने भीतर इतनी --- पैदा करें रहमत के साये के नीचे ठहरने के अधिकारी बनें। ऐसा ना हो के केवल माह रमज़ान में नमाज़ी, क़ुरान कि तिलावत (अनुवाचन) करने वाले,, सदखे व क़ैरात में पहल करने वाले, रातों में इ़बादत करने वाले रहें तथा पावन रमज़ान के बाद --- का प्रदर्शित करने वाले, पापों पर तौबा --- करने वाले तथा शैतान के नक़्शे खदम पर चलने

लगें। जिस के परिणाम में अल्लाह तआ़ला का क्रोध व ग़ज़ब व जलाल का शिकार हो जाएं। अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

माह रमज़ान में हमें क़ैर व भलाई इस लिए दान की गई थी के हम ने परहेज़गारी अपनाई थी। सम्पूर्ण मास तक़वा व तहारत (धर्मनिष्ठ) के पाबंद रहे तथा इस के गुज़र जाने के बाद यदि हम तक़वा तथा परहेज़गारी पर अटल व इस्तेखामत के साथ जम रहें तो अवश्य हमारा जीवन खुशगवार रहेगा।

यदि रमज़ान के प्रकार अन्य महिनों में हमारे विश्वास व कर्म से संबंधित स्थायी आचरण पाई गई तो निस्संदेह हम क़ैर व बरकत से --- रहेंगे। तथा अवश्य खुदाए तआ़ला रहीम कि करम से संबोधित करेगा हमें अपनी आगोश में ले लेंगे। जैसा के अल्लाह तआ़ला का वादा है, सुरह आ़राफ में आदेश हो रहा हैः-

भाषांतरः- तथा मेरी रहमत व दयालुता हर चीज़ को आच्छादित है। तो मैं इसे अवश्य इन के अधिकार में लिख दुँगा जो परहेज़गारी (धर्मनिष्ठ) अपनाएगा।

(सुरह अल आ़राफः 07:156)

अल्लाह तआ़ला के इस आदेश से उजागर हो रहा है के जब तक हम में तक़वा व तहारत है, हम विशेष रहमतों के साये में रहेंगा तथा जब तक हम में परहेज़गारी पाई जाए। चैन व विश्राम का जीवन उपलब्ध रहेगा।

हज़रत सईद बिन – रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि इस्तेखामत---

धर्म के पूर्वजों के जीवन से रोशनी प्राप्त करें के इन तक़वा किस कमाल को पहंचा हुआ था। धर्म पर इन कि इस्तेखामत (अटल व स्थिर) कैसी थी, हज़रत सईद बिन मुस्सैब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक विशाल व प्रधान ताबई गुज़रे हैं।

जिन्हें सैयुद ताबईन के लखब (शीर्षक व उपाधि) से दुनिया याद करती है। उन के हालात वर्णन करते हुए इमाम अबु नईम अस्फहानी ने हुलयतुल ऑलिया में वर्णन किया हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबदुल मुनईम --- बिन इद्रीस अपने पिता से वर्णित करते हैं, इन्हों ने फरमायाः हज़रत सईद बिन मुसैयब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 50 वर्ष तक इशां के वुज़ू से नमाज़ फज्र अदा फरमाई तथा हज़रत सईद बिन मुसैयब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन है के इन्हों ने फरमायाः 50 वर्ष से कभी मेरी तकबीर ऊला (प्रथम तकबीर) नहीं छूटी तथा ना मैं ने नमाज़ के अवसर पर 50 वर्ष से किसी पुरुष कि गुद्दी --- देखी है। (यथा हमेशा प्रथम सफ ही में तकबीर ऊला के साथ नमाज़ पढने का सौभाग्य व सुख प्राप्त रहा)।

(हुलयतुल ऑलिया व तबखात अल सुफिया, तबखतुल अहले महीना, सईद बिन अल मुसैयब, पः 186-187)

यहाँ उदाहरण के रूप में हज़रत सईद बिन मुसैयब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि घटना वर्णन की गई। वरना हमारे सम्पूर्ण --- किराम तथा प्रिय सालेहीन के जीवन इस प्रकार कि पालन व --- के घटना व --- से --- हैं। जिन से हमें अपने जीवन को पवित्रता व शुद्धता बनाने का अभ्यास व पाठ मिलता है।

ग़ौर व सकेंद्रित फरमाएं के हज़रत सईद बिन मुसैयब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि इस्तेखामत कि क्या स्थिति है। खुद आप उपर्युक्त फरमा रहे हैं के 50 वर्ष का लम्बा काल गुज़र चुका परन्तु मैं ने की पहली सफ के अलावा जमात के साथ नमाज़ संपादन ना की।

जिस के बिना मैं ने कभी अलगी सफ वालों कि गुद्दी नहीं देखी। 50 वर्ष में पीढी बदल जाती है। सरकार व राज्य बदल जाती है। यूवक बूढापे को पहुंच जाता है। परन्तु 50 वर्ष के लम्बी काल में आप के इस्तेखामत का पाये में अंश बराबर अंतर ना आया।

इस प्रकार लम्बे काल में बाजमात नमाज़ के संपादन, प्रथम तकबीर का व्यवस्था, प्रथम सफ में शिरकत निस्संदेह असामान्य रूप से इस्तेखामत कि आईनेदार हैं। रमज़ान के बाद जीवन को बेहतर व श्रेष्टतर बनाने वालों के लिए तथा परहेज़गारी पर अटल रहने वालों के लिए एक उत्तम व सर्वश्रेष्ठ आदर्श व उदाहरण है।

रमज़ान का महिना समाप्त हुआ, अल्लाह का फैज़ान नहीं!

याद रखें के हम ने रमज़ान के महिने को तो विदा किया है परन्तु इस के फैज़ान को विदा नहीं किया। क़ुरान कि तिलावत को विदा नहीं किया।

अच्छे कर्म को विदा नहीं किया, जिस प्रकार हम रमज़ान मुबारक में अच्छे कर्म संपादन करते थे, इस सिलसिले को रमज़ान के बाद भी जारी रखें।

इस महिने में हमारा हर कदम (कार्यवाही) नेकी तथा भलाई कि ओर उठा करता था, धीरज व सहनशीलता (सब्र व धेर्य) व धन्यवाद व शुक्र हमारा पेशा बन चुका था। यह रफतार व चरित्र रमज़ान के महिने के बाद भी बाखी रहे।

रमज़ान के महिने में हमारा हर कर्म पावन शरीअ़त कि रोशनी में हुआ करता था। रमज़ान मुबारक के गुज़रने के बाद इस पालन में ग़फलत व अज्ञानता ना होने पाय। इ़मान वालों का यह आदर्श व वर्ग के वह अल्लाह के अह्काम से --- करें।

रमज़ान के रोज़ेदारों का यह तरीक़ा नहीं के वह इस महिने के गुज़र जाने के बाद इरशाद नबवी से दूरी प्राप्त करें। क्यों के शरीअ़त तो इ़मानवालों पर हर परिस्थिति में अनिवार्य है।

धर्म पर निष्ठा रहने वाले लोक परलोक में धन्य

रमज़ान मुबारक हो या अन्य महिने, हर परिस्थिति में शरीअ़त पर दृढ़ता अवश्य है तथा धर्म पर दृढ़ता व निष्ठा ही सफलता है। अल्लाह तआ़ला ने अपने कलाम मजीद में इन बन्दों को सराहा है जो अपने विश्वास व कर्म में

अटल व स्थिर रहते हैं। जैसा के निम्नलिखित आयत मुबारक में आदेश हैः-

भाषांतरः- जिन लोगों ने कहा कि "हमारा रब अल्लाह है।" फिर इस पर दृढ़तापूर्वक जमे रहे, उनपर फ़रिश्ते उतरते है कि "न डरो तथा न शोकाकुल" हो, तथा उस जन्नत की शुभ सूचना लो जिसका तुमसे वादा किया गया है।

(सुरह हा. मीम. सजदा 41:30)

एक मोमिन बन्दे में अपने विश्वास व कर्म पर निष्ठा जीवन भर तक रहनी चाहिए। मरते दम तक वह इसलाम के अहकाम पर दृढ़ता पूर्वक रहे तथा अपने अच्छे कर्म पर पाबंदी करें। तभी वह दुनिया व आखिरत (लोक परलोक) में अनुमन्त्रित व भाग्य का अधिकारी होगा। अल्लाह तआ़ला फरमाता हैः-

भाषांतरः- ऐ ईमानवालो! अल्लाह का डर रखो, जैसा की उसका डर रखने का हक़ है। तथा तुम्हारी मृत्यु बस इस दशा में आए कि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो।

(सुरह आले इ़मरान 03:102)

जो लोग अल्लाह तआ़ला का आज्ञापालन में व्यस्त रहते हैं। दिन रात इस कि नाफर्मानी व आज्ञालंघन से अवरोध करते हैं। रात दिन इस कि इ़बादत व बन्दगी किया करते हैं। इसी कि हम्द व सना (प्रशंसा व गुणगान) तथा याद में अपने --- गुज़ारा करते हैं।

अल्लाह तआ़ला कि सन्तुष्टी व प्रसन्नता के लिए रात भर इ़बादत करते हैं। तथा --- व्यापार व कारोबार इन्हें अल्लाह के ज़िक्र से नहीं रोकते। ऐसे बन्दों को क़यामत के दिन सम्माननीय स्थान दिया जाएगा। जिस दिन हर व्यक्ति अल्लाह कि बारगाह में खौफ व भय, बेचैनी व चिन्ती के साथ उपस्थित होगा। उस दिन इन्हें अमन व शान्ति, राहत व रहमत से संबोधित कर उन कि शान प्रकट की जाएगी।

मुसतदरक अ़ला सहिहैन में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- ऐ इ़मानवालो अल्लाह से डरो जिस प्रकार इस से डरने का हक़ है तथा इसलाम कि स्थिति पर ही संसार से विदा हो जाओ। सैयदना उ़खबा बिन आ़मिर जहनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वर्णित है, उन्हों ने फरमायाः हम हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के साथ एक यात्रा में थे तो हम बारी-बारी से ऊँटों को चराने कि ज़िम्मेदारी लेते थे. जब मेरी बारी आई तो मैं ने अपने ऊँटों को चर ने के लिए बेजा। फिर वापस हो कर हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि पावन सेवा में उपस्थित हुआ। जबके आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) सहाबा किराम के बीच खुत्बा आदेश फरमा रहे थे। तो मैं ने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) को यह आदेश फरमाते हुए सुनाः लोगों को एक ऐसे मैदान में जमा किया जाएगा के नेत्र उन को पालेगी। दाई़ उन को अपनी आवाज़ सुनाएगा। एक सूचना देने वाला सूचना देगाः- अवश्य सम्पूर्ण झुण्ड जान लेगा के आज बढाई किस के लिए है। यह सूचना 3 बार होगी। फिर सूचना देने वाला कहेगाः वह लोग कहां हैं जिन को पहलू --- से अलग हो जाया करते थे? फिर कहेगाः-

वह लोग कहाँ हैं जिन्हें अल्लाह के ज़िक्र से, नमाज़ संपादन करने तथा ज़कात समापन करने से ना व्यापार अज्ञात करती थी तथा ना लेन-देन, वह इस दिन से डरते थे जिस में दिल तथा निगाहें – होंगी। फिर सूचना देने वाला सूचना देगाः अवश्य सम्पूर्ण लोग जान लेंगे के आज बढाईकिस के लिए है। फिर कहेगाः खूब हम्द (प्रशंसा व गुणगान) करने वाले कहाँ है जो अपने रब कि हम्द व सना (प्रशंसा व गुणगान) सुना करते थे। यह सहीह हदीस है।

(अल मुसतदरक अ़ला सहिहैन, तफसीर सुरह अल नूर, हदीस संख्याः 3467)

निष्ठा व दृढ़ता के बारे में अल्लामा इ़समाईल हख्खी रहमतुल्लाहि अलैह ने रूह उल बयान में लिखा हैः-

भाषांतरः- शेक़ अबु तालिब रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया कामकाज को पाबंदी संपादन देना इ़मान वालों के शिष्टाचार से है तथा इ़बादत गुज़ारों का तरीक़ा है अधिक यह इ़मान में अधिकता का कारण तथा --- के लक्षण है।

(तफसीर रूह अल बयान, सुरह आले इ़मरान -112)

धर्म पर निष्ठा कि बरकत

नेक कर्म पर स्थिर व अटल, क़ैर व भलाई को परिणाम देने पर दृढ़ा के कारण से मानव का स्थान व प्रतिष्ठा बुलंद होता है। कठिनाईयां दूर हो जाती हैं। जैसा के – नज़हतुल मंजालिस में बनी इसराईल कि एक हमेशां स्थायी, धर्म पर अटल रहना तथा इ़बादत गुज़ार महिला कि घटना वर्णन हैः-

भाषांतरः- बनी इसराईल में एक धर्मनिष्ठ महिला नमाज़ को समय कि पाबंदी के साथ संपादन करती थी। इस महिला का पति ग़ैर मुसलिम था (पूर्व शरीअ़त में ग़ैर मुसलिम से विवाह करना मना नहीं था)। जो उसे नमाज़ से रोकता था तथा वह महिला इस कि बात नहीं मानती थी। पति ने इस महिला के पास कुछ धन अमानत रखाई। फिर खुद उसे चोरी किया तथा उसे समुद्र में डाल दिया।

उस धन को एक मछली ने निंगला तो एक शिकारी ने उस मछली का शिकार किया तथा उसे नेक व भली महिला के पति को बेच दिया। महिला ने मछली ली ताकि उसे उपयोग करे तो इस के पेट में वह थैली पाई, जिस में अमानत का धन रखा हुआ था। फिर इस ने थैली को उस के स्थान रख दिया तथा पती ने उस से वह अमानत इच्छा की तो महिला ने अमानत को यह सुरक्षा से वापिस कर दिया। पती ने अमानत कि वापसी पर आश्चर्य किया। महिला ने --- जलाया ताकि उस पर रोटी पकाए तो ग़ैर मुसलिम पती ने महिला को --- में फैंक डाला, महिला ने कहाः ऐ वह तन्हा ज़ात जिस का कोई शरीक नहीं! मैं आग कि ताब नहीं ला सकती, तो अल्लाह तअ़ाला के आदेश से इसी समय आग बुझ गई।

(--- नज़हतुल मंजालिस व --- जिल्द 1, पः 105)

माह रमज़ान में कि गई शिक्षा का उद्देश्य

रमज़ान के महिने में विशेष रूप से हमारी रूहानी शिक्षा की गई थी। रोज़े कि स्थिति में हम ने यह बात हमेशां लिहाज़ रखी के अल्लाह तअ़ाला हमें देख रहा है। यही कारण था के रोज़ेदार बंद कमरे में भी भूक से बेचान,

प्यास से बेताब होने के बावजूद कभी कुछ खा-पी लेने कि प्रयत्न व कशिश नहीं किया क्यों के इस को विश्वास है के कोई देखे या ना देखे, मेरा रब मुझ से बेखबर नहीं है। मेरा पालनहार तो मुझे देख रहा है। क्यों कि इसे प्रथम ही से सावधान किया गया था। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- क्या वह नहीं जानता के अल्लाह तआ़ला देख रहा है।

(सुरह अल अलक़ 96:14)

इस शिक्षा का लक्ष्य यही है के रमज़ान के बाद भी हर समय मानव यही कैफियत अपने भीतर बाखी रखे तथा हमेशां इस को पेश नज़र रखे के मालिक व मौला मुझे देख रहा है। मेरी चरित्र व व्यवहार, देखना-सुन्ना तथा चाल-चलन पर नज़र रखा हुआ है। यह कैफियत बाखी रहे तथा यह बात बुद्धिम में रखनी चाहिए के खदम कभी नाजाइज़ स्थान कि ओर नहीं पढेंगे।

इस कि ज़बान कभी अपशब्द व दुर्वचन में व्यस्त नहीं होगी, हाथ कभी शरीअ़त के विरुद्ध कर्म का समापन नहीं करेंगे तथा आँखें कभी धृष्ट छवि तथा ग़ैर महरम कि ओर नहीं उठेंगी।

रमज़ान कि शिक्षा फिक्र व कर्म कि सुरक्षा का माध्यम

पावन रमज़ान कि इस विशाल रूहानी शिक्षा के बाद कल क़यामत के दिन कोई व्यक्ति तकलीफ नहीं कर सकेगा के नफ्स व शैतान के छल व कपट में आकर हम पाप कर बैठे हैं। क्यों के एक माह कि शिक्षा में शैतान को क़ैद कर दिया गया तथा रोज़ों के द्वारा नफ्स कि इसलाह व सुधराव की गई।

क़ुरान करीम कि तिलावत तथा तरावीह के द्वारा रूहानी शक्ति में अधिकता कर दिया गया। जिस प्रकार देश कि सुरक्षा के लिए सेना तैयार कर के सीमांत (सरहद) पर कढा किया जाता है ताकि विरोधी देश में प्रवेश ना हो।

इसी प्रकार का इ़मान का देश जो नेक व भले कर्म के द्वारा आबाद है इस कि सुरक्षा के लिए मानव को रूहानी शिक्षा की गई तथा इसे --- कर दिया गया के कहीं शैतान इस के इ़मान व विश्वास (अखीदे) तथा नेक कर्म को बरबाद व विनाश ना कर सके।

रमज़ान के बाद भी हमें नेक कर्म करते हुए तक़वा तहारत वाला जीवन बसर करना अनिवार्य है तथा प्रिय शरीअ़त के हर आदेश पर अभिनय करना अवश्य है। क्यों के हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम जो अ़मल फरमाते हमेशां इस पर हमेशां करते थे तथा इस कर्म को छोडना नहीं फरमाते। आप का कर्म किसी ज़माना या काल पर घेरा हुआ नहीं होता। जैसा के सहीह बुखारी व सहीह मुसलिम शरीफ आदि में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अ़लखमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः मैं ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दिखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से पूछा करते हुए निवेदन कियाः ऐ उम्मुल मोमिनीन! हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का मुबारक अ़मल कैसा हुआ करता, कया आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) (अ़मल व कर्म के लिए) कुछ दिन विशेष फरमाया करते थे? हज़रत उ़म्मुल मोमिनीन ने फरमायाः नहीं! आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) अ़मल मुबारक हमेशा हुआ करता, तुम में कौन इस प्रकार अ़मल कर सकता

है? जिस प्रकार हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने किया हो।

(सहीह मुसलिम, हदीस संख्याः 1865, सहीह बुखारी हदीस संख्याः 1981)

मुसलमान कि प्रतिष्ठा के रूप हमारी ज़िम्मेदारी है के हम अल्लाह तआ़ला तथा इस के रसूल करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के अहकाम पर अ़मल पैरा हैं। पाँच समय कि नमाज़ जमात के साथ पढने का प्रबंध करें।

क़ुरान करीम कि तिलावत करें, माता-पिता कि सेवा करें। ग़रीबों व दरिद्र का ख्याल रखें। निर्धन व रहित लोग कि मदद करें। अल्लाह के अधिकार व इ़बाद के अधिकार का समापन में सुस्ती व आलस्य ना करें।

अल्लाह कि बारगाह में दुआ़ करें के अल्लाह तआ़ला रमज़ान के महिने कि तरह साल भर हमें अपनी रहमतों व दयालुता के साये में इ़बादत व बन्दगी में व्यस्त रखे। आज्ञापालन कि मार्गदर्शन दान फरमाएं। पापों के अभियुक्त, शैतान के छल व कपट से बचाए। अपने हबीब पाक अलैहिस सलाम के संरक्षण में हमें अवज्ञा से दूर रखे।

नेक व भले कर्म करने कि मार्गदर्शन प्रदान फरमाए तथा हर शर से सावधान व सुरक्षित रखे।

आमीन

अनवारे-क़िताबत- 10

		देहान्त का वर्ष
क़ुरान करीम	अल्लाह सुभानाहु वा तआ़ला	
अहकामुल क़ुरान	इ़माम अबु बक्र अहमद बन अ़ली राज़ी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह	370 हिज्री
तफसीरूल खुरतुबी	इ़माम अबदुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद रहमतुल्लाहि अलैह	671 हिज्री
सहीह बुखारी	इ़माम मुहम्मद बिन इसलाइ़ल बुखारी रहमतुल्लाहि अलैह	256 हिज्री
सहीह मुसलिम	इ़माम मुसलिम बिन हिजाज अबूल हसन खुरैशी रहमतुल्लाहि अलैह	261 हिज्री
जामे तिरमिज़ी	इ़माम मुहम्मद बिन ठवैसी तिरमिज़ी रहमतुल्लाहि अलैह	279 हिज्री
सुनन नसाई	इ़माम अबु अबदुर्रहमान अहमद खज़वैनी रहमतुल्लाहि अलैह	303 हिज्री
सुनन इ़ब्न माजह	इ़माम अबु अबदुल्लाह मुहम्मद बिन यैज़ीद खुजवैनी रहमतुल्लाहि अलैह	273 हिज्री
सुनन अबु दाउद	इ़माम सुलैमान बिन इशअ़त सजिस्तानी रहमतुल्लाहि अलैह	275 हिज्री
मोता अल इ़माम मालिक	इ़माम मालिक बिन अनस बिन मालिक रहमतुल्लाहि अलैह	179 हिज्री
मुसन्नफ	इ़माम अबदुर रज़्ज़ाख बिन हिमाम सुनआ़नी रहमतुल्लाहि	211

www.Ziaislamic.com

अबदुर्रज़्ज़ाख	अलैह	हिज्री
मुसन्नफ इब्न अबि शैबह	इमाम अबु बक्र बिन मुहम्मद बन अबु शैबह कूफी रहमतुल्लाहि अलैह	235 हिज्री
मुसनद अल इमाम अहमद	इमाम अबु अबदुल्लाह अहमद बिन मुहम्मद बिन जंबल शैबानी रहमतुल्लाहि अलैह	241 हिज्री
शरह मआनी अल आसार	इमाम अबु जअफर अहमद बिन मुहम्मद अज़दी तहावी रहमतुल्लाहि अलैह	321 हिज्री
सहीह इब्न हिब्बान	इमाम अबु हातिम मुहम्मद बिन हिब्बान यतामी दारमी रहमतुल्लाहि अलैह	354 हिज्री
अल मअजम अल कबीर	इमाम सुलैमान बिन अहमद तबरानी रहमतुल्लाहि अलैह	360 हिज्री
अल सुनन अल कुबरा	इमाम अबु बक्र अहमद बिन हुसैन बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह	458 हिज्री
कंज़ुल उम्माल	इमाम अलाउद्दीन बिन हिसामुद्दीन मुतखी हिन्दी रहमतुल्लाहि अलैह	458 हिज्री
सुबुलुल हुदा वर्रशाद	इमाम मुहम्मद बिन यूसुफ सालिह शामी रहमतुल्लाहि अलैह	942 हिज्री
किताब उल क़िराज	इमाम अबु यूसुफ यअखुब बिन इब्राहीम अन्सारी रहमतुल्लाहि अलैह	182 हिज्री
कंज़ुद दखाइख	इमाम अबूलबरकात अबदुल्लाह बिन अहमद बिन महमूद निसफी रहमतुल्लाहि अलैह	710 हिज्री
अहकाम अहल उल ज़िम्मह	अल्लामा मुहम्मद बिन अबु बक्र इब्न जूज़िय	751 हिज्री
दुर्रूल मुखतार	अल्लामा मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि अलैह	1252 हिज्री
अल फतावा आलमगिरी	अल्लाह शैक़ निज़ामुद्दीन (व उ़लेमा हिन्द कि एक जमात) रहमतुल्लाहि अलैह	

फतावा अल बुलदान	इ़माम अहमद बिन यहया बिन जाबिर बुलाज़दी रहमतुल्लाहि अलैह	279 हिज्री
अल बिदायह वन निहायह	शेक़ अबु अलफिदा अल्लामा इसमाइ़ल बिन अ़म्र बिन कसरी रहमतुल्लाहि अलैह	774 हिज्री

परिचय अबुल हसनात इसलामिक रीसर्च सेन्टर

यह वैश्वीकरण (सार्वभौमिकता) का दौर है, आज विश्व एक छोटे गांव कि शिक्ल प्राप्त कर गया है। इंटरनेट (अन्तरराष्ट्रीय कम्प्यूटर तन्त्र) एक विशाल जाल के प्रकार सारे विश्व को घेरा हुआ है। पल भर में एक बात सारे विश्व में पहुंचाई जाती है।

विद्युन्यय साधन के माध्यम जिस प्रकार आम तथा साधारण होते जा रहे हैं इसी प्रकार समाज में अश्लीलता व निर्लज्जता फैलती जा रही है। इन साधन के ग़लत प्रयोग के कारण युवा पीढी विनाश हो रही है। इसलाम के विरोधी इन शक्तिशाली माध्यम व साधन के द्वारा इसलाम के चित्र को बिगाड कर पेश कर रहे हैं।

कभी इसलाम में के संस्कृति पर आक्रमण किए जा रहे हैं तो कभी से इसलाम कि शुद्धता को व्यर्थ किया जा रहा है। कहीं इसलाम के सिद्धांत पर आक्षेप किया जा रहा है तो कहीं क़ुरानी आयात (पद्य) का विरोध किया जा रहा हैं। ऐसे अस्थिरमति समय में इसलामी विश्वास के संरक्षण, इसलाम के सिद्धांत तथा अहकाम शरीअ़ कि पासदारी के लिए इसलाम के विश्वास का प्रदर्शन करने और भले कर्म व उच्च शिष्टाचार को आम करने लिए इस बात कि अत्यन्त आवश्यकता थी के इन्हीं माध्यम तथा वस्तुओं का प्रयोग कर

के विश्व पर पर सत्य को स्पष्ट किया जाए तथा इसलाम कि सच्ची चित्र को जगत के सामने पेश किया जाए ताके मुसलिम समुदाय सत्य कि सरबुलंदी के लिए तैयार हो जाएं तथा असत्यता से हमेशां के लिए बेज़ार हो जाए।

इन्हीं लक्ष्य व उद्देश्य के प्रति अबुल हसनात इसलामिक रीसर्च सेन्टर 18 ज़िल हज्जा 1428 हिज्री 29 डिसम्बर, शनिवार के दिन मौलाना मुफती सैयद ज़िया उद्दीन नक्षबंदी खादरी दामत बरकातुहुम शेकुल फिखह जामिया निज़ामिया ने स्थापित फरमाया, जिस का रजिस्ट्रेशन नम्बरः 501/2008 है।

सर्वश्रेष्ट प्रशंसा व गुणगान अल्लाह तआ़ला के लिए! हज़रत अबुल क़ैर सैयद रहमतुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी रहमतुल्लाहि अलैह जो हज़रत हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह के उत्तराधिकारी हैं रीसर्च सेन्टर को अपने जीवन भर मार्गदर्शित फरमाते रहे। मुफक्किर इसलाम मौलाना मुफती क़लील अहमद दामत बरकातुबुम आलिया जामिया निज़ामिया उपकुलपति हैं इस के मुख्य सहायक है।

मंत्रणा- मण्डल मे शामिल हैं-
(1)- मौलाना डाकटर हाफिज़ शैख अहमद मोहिउद्दीन शरफी साहिब संचालक दारुल उ़लूम नोअ़मानिया तथा मुख्य सलाहकार।

(2)- मौलाना खाज़ी सैयद शाह अ़ाज़म अ़ली सूफी खादरी साहिब अध्यक्ष कुल हिन्दुस्तानुल मशाइक़।

(3)- मौलाना सैयद शाह महमुद पाशा खादरी साहिब, ज़रीन कुलाह, सज्जादह नशीन हज़रत सुलतान उल वाईज़ीन ज़रीन कुलाह (रहमतुल्लाहि अलैह)
(4)- मौलाना डाकटर हाफिज़ सैयद शाह बदिअ़उद्दीन साब्री साहिब अध्यक्ष (मण्डल विद्याभ्यास) उसमानिया यूनिवर्सिटी।

(5)- मौलाना डाकटर मुहम्मद मुसतफा शरीफ नक्षबंदी साहिब मुख्य विभाग- अ़रबिक विभाग, तथा निर्देशक दइ़रतुल माअ़रिफ अल उसमानिया।

(6)- आदरणीय अ़ाली जनाब सैयद अहमद पाशा खादरी साहिब एम.एल.ऐ. चारमीनार चुनाव-क्षेत्र, प्रधान कार्यदर्शी, कूल हिन्द मजलिस इत्तेहादुल मुसलिमीन।

(7)- मौलाना ख्वाजा मुहम्मद बहाउद्दीन फारुख नक्षबंदी खादरी साहिब।

(8)- मौलाना शाह मुहम्मद फसीहउद्दीन निज़ामी साहिब अध्यक्ष पुस्तकालयाध्यक्ष, जामिया निज़ामिया

(9)- मौलाना सैयद शाह ऑलिया हुसैनी मुरतुज़ा पाशाह साहिब (पोते) शेकुल इसलाम रहमतुल्लाहि अलैह।

(10)- मौलाना सैयद शाह इब्राहीम खादरी साहिब ज़रीन कुलाह सज्जादा नशीन, हज़रत खुबूल पाशह ज़रीन कुलाह।

(11)- मौलाना मुहम्मद हामिद हुसैन हस्सान फारुखी साहिब कामिल जामिया निज़ामिया, निरीक्षक, सुन्नी दावत इसलामी आंध्र प्रदेश।

(12)- मौलाना सैयद शाह नुर उल सूफी रुही पाशह साहिब मुख्य खाज़ी, सिकंद्राबाद।

(13)- मौलाना मुहम्मद सुलतान अहमद खादरी साहिब कामिल जामिया निज़ामिया।

(14)- मौलाना सैयद शाह फैज़उद्दीन खुरैशी खादरी साहिब सलीम पाशह सज्जादा नशीन, बारगाह जमालिया अम्बरपेट, हैद्राबाद।

(15)- ज़ाली जनाब अलहाज मुहम्मद ज़हीरउद्दीन नक्षबंदी खादरी साहिब, मुतवल्ली, मसजिद अबुल हसनात जहानुमा हैद्राबाद।

(16)- ज़ाली जनाब अलहाज ख्वाजा मोअ़नउद्दीन इखबाल खादरी मुलतानी साहिब अध्यक्ष, मीलाद कमेटी हैद्राबाद तथा

(17)- आली जनाब मिरज़ा असलम बेग़ साहिब, शामिल हैं।

रीसर्च सेन्टर के प्रति इसलामी पुस्तकें प्रकाशन का प्रबंध तथा अन्य विषय पर सी डीज़ जिसकी आज आवश्यकता है उसका सिलसिला जारी है। विश्वास, जीवनी, धर्मशास्त्र समस्याएं, वर्तमान समस्याएं, शिष्टाचार, नीतिविद्या, साहित्यिक तथा सार्वजनिक भाषण पर पुस्तकें उर्दू व अँग्रेज़ी भाषा में उपलब्ध है, तेलुगू में भी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं।

मुफती साहब क़िबला के व्याख्यान व भाषण (लेकचर्स) कि नइ सी डीज़ हर सप्ताह विमोचित होती हैं तथा सी डीज़ और डीवीडी (200) से अधिक उत्तेजक विषय पर सी डीज़ उपलब्ध हैं। मुफती साहब के साप्ताहिक लेकचर्स वैब साइट पर सीधा प्रसारण किए जा रहे हैं जो सारे विश्व के लिए लाभदायक व हितलाभ का माध्यम है।

सेन्टर कि ओर से 40 से अधिक स्थान पर निमन्त्रण व दावाह का काम जारी है, इन अधिवेशन में विषय एक विशिष्ट लेकचर के अतिरिक्त क़ुरान करीम का अभ्यास (शासन), सहीह बुखारी का अभ्यास तथा फिख्ह (धर्मशास्त्र) का अभ्यास से सैंकडो सदस्य वह कर रहे हैं।

आदरणीय हज़रत मुफती साहब के सेन्टर से प्रसिद्ध होने वाले विषय व पुस्तकें, निबन्ध, शासन व फतावा के वीडियो क्लिप्स से हैद्राबाद तथा अतराफ के मुसलमान खूब लाभ उठा कर रहे हैं। अधिक देश कि अन्य राज्य से भी पुस्तकें तथा वीडियो सीडीज़ कि मांग दिन बदिन बढती जा रही

है। इस के अतिरिक्त, लाखों कि संख्या वह है जो इन्टरनेट पर आनलाइन हैं वह लाभ उठा रही हैं।

फेसबुक, यूटियुब तथा गुगल वीडियो तथा अन्य वैबसाइट पर समय के अनुसार से उत्तेजिक विषय तथा पुस्तकों के सात भी अपलोड किए जाते हैं। जिन से देश व प्रदेश कि जनता ग़ैर मामुली संख्या में प्रकोप करते हैं तथा अपने सुझाव व विचार का प्रकट करते हैं।

सेन्टर कि ओर से हर वर्ष गर्मी के मौसम कि शिक्षा के अवसर पर अल्पावधि (अल्पकालीन) कोर्स का प्रबंध रह करता है। स्पोकन (मौखिक) अ़रबिक क्लास का भी प्रबंध है। जिस में दैनिक आधार के प्रति धार्मिक छात्र के अलावा स्कूल व कॉलेज के छात्र तथा कर्मचारी व व्यापारिक पेशे के लोग शिक्षा प्राप्त करते हैं।

मुफती साहब ने वर्तमान काल के आवश्यकता के पेश नज़र रीसर्च सेन्टर ने इसलामी वैबसाइट Www.Ziaislamic.com उर्दू तथा अंग्रेज़ी भाषा में आरम्भ कि है जो नीचे वर्णन महत्व कार्य पर स्थापित हैः-

---

-

- उच्च अनुसंधान, फतवे जो क़ुरान करीम, हदीस के अनुसार, अखाइ़द (विश्वास), इ़बादात (आराधना), मामलात (व्यवहार), सामाजिक जीवन तथा शिष्टाचार व सभ्याचार के आधार पर स्थापित है।
- अहले बैत व सहाबा के जीवनी, विश्वास तथा शिक्षण।
- धार्मिक (सदाचारी) मानव के जीवनी, विश्वास तथा शिक्षण।
- मानसिक (बुद्धि-विषयक), शोधन, विश्वास से संबंधित उच्च अनुसंधान पुस्तकें।
- इसलामी सिद्धांत पर विचारधारा निबन्ध।

- वर्तमान व उत्तेजिक सुविज्ञ व सुशिक्षित निबन्ध।
- आधुनिक व वैज्ञानिक सम्सया तथा उस पर शरीअ़त का निर्णय।
- मनमोहक व आकर्षक करने वाले श्रव्य व वीडियो भाषण।

एक विशेष संभाग "मुहद्दिस देक्कन" के नाम से पेज है जिस में ह़ज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह कि रचना व शिक्षण उपलब्ध शामिल है।

एक और संभाग *गुलिस्तान ह़ज़रत शेक़ुल इसलाम* के नाम से पेज है जिस में ह़ज़रत शेक़ुल इसलाम, निर्माता जामिया निज़ामिया रहमतुल्लाहि अलैह कि रचना तथा विवरण उपलब्ध हैं।

रमज़ान मास के अवसर पर एक विशेषत पेज रमज़ान इस्पेशल के नाम से प्रसिद्ध किया जाता है जो रमज़ान कि उत्तमता व विशेषता (उत्कृष्टता व प्रतिष्ठा) से संबंधित अहादीस शरीफ, रोज़े के मसाइल, तावीह के मसाइ़ल, ऐअ़तेकाफ के मसाइ़ल, शबे खद्र के विशेषता व मसाइ़ल व अह्काम और दुआ़एं ईद कि नमाज़ के मसाइ़ल व अह्काम तथा सदक़े फित्र के अह्काम पर निर्धारित होता है।

ह़ज के अवसर पर ह़ज व उ़मरह तथा ज़ियारत के मसाइ़ल व अह्काम, उत्तमता व शिष्टाचार, फतावा व विषय पर स्थापित एक विशेषत पेज "ह़ज स्पेशल" आरम्भ किया जाता है।

महिलाओं के लिए मसाइ़ल व अह्काम से अनुभव सुशिक्षित होने तथा इन को धार्मिक ज्ञान के दृष्टिकोण से एक संभाग "वुमेन्स सेकशन" नाम से स्थापित किया गया। अल्लाह तआ़ला के कर्म से रीसर्च सेन्टर प्रति के प्रबंध नीचे वर्णन विभाग कार्यरत हैं।

- अनुसंधान का विभाग

- विकास व शिक्षण का विभाग
- इसलामी धर्मशास्त्र का विभाग
- भाषांतर का विभाग
- दावह का विभाग
- प्रकाशित व मुद्रांकन का विभाग

अल्लाह तआ़ला कि कृपा है इस वैबसाइट से उपमहाद्वीप के अतिरिक्त से प्रस्तुत धारा अतिरिक्त सऊदी अरब, U.A.E. कतर, उमान, ईरान, अमरिका, ऑस्ट्रेलिया, स्पेन, ब्राज़ील, थाइलैंड, न्यूज़ीलैंड, आयरलैंड, नेधेरलैंड, कनाडा, कुवैत, इटली, बगंलादेश, U.K., उरपह, जापान, स्वीडन, मलेशिया, मॉरिशस, रुस, सीरिया, कोलम्बिया, स्लोवाकिया, डेनमार्क, नार्वे, ग्रीस, इज़राइल, टर्की, मौजम बैकय, बेल्जियम, सन मराइन, हंगरी और दुनिया के अनेक देशों से रोजाना हजारो व्यक्ति दर्शन कर रहें है।

महाराष्ट्र राज्य के नगर पुना में दिस्म्बर, 22, 2011, को जामा मसजिद केमपे में होने वाले सम्मेलन में विषयः *भारत में इसलाम का पदार्पण, उनके व्यवस्थित व सुकारक प्रसारण* में आदरण मुफती साहब के भाषण के बाद, मसजिद के खतीब, मौलाना हाफिज़ मुहम्मद अयुबी अशरफी आगे बढकर अबुल हसनात इसलामिक रीसर्च सेन्टर के ब्रांच (शाखा-कार्यालय) के प्रस्ताव को पेश किया तथा पुना में ब्रांच प्रमाणित किया गया और मसजिद के खतीब को मुखिया तथा मौलाना हाफिज़ मुहम्मद अयुबी अशरफी के उपराष्ट्रपति घोषित किया गया। अबुल हसनात इसलामिक रीसर्च सेन्टर के क्रियाशीलता (सक्रियता) के प्रसार के लिए क्षेत्रीय शाख स्थापित किए जा रहे हैः- निज़ामाबाद, बोधन, करीमनगर, आदिलाबाद, यमगनुर, कुरनूल, अधूनी, गुनतकल, विजैयवाडा, होसपेट तथा अन्य स्थान पर जनता कि आग्रह व मांग पर स्थापित होंगे।

अल्लाह तआ़ला रीसर्च सेन्टर कि इन कार्यकलाप में दिन दुगनी रात चौगनी सफलतता व उन्नति दान फरमाए तथा अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के सदखे व तुफैल इन सेवा को स्वीकार फरमाएं।